AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

उत्तर प्रदेश शिल्पकला के निर्माण एवं अभिकल्पन में दृश्यकला का प्रयोग

नवीन कुमार विश्वकर्मा (शोधार्थी)
ललित कला विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध सार

भारत की विशिष्ट सांस्कृतिक छवि में हथकरघा और हस्तशिल्प में दृश्यकला की समृद्ध विरासत का बड़ा योगदान है। शिल्पकारों के हथौड़े से आश्चर्यजनक और विविधरूप ग्रहण करने वाली धातुओं की वस्तु उत्पाद तथा कालीनों और दरियों, बक्सों एवं झोलों, आभूषणों की विविधता भले ही देश के किसी भी कोने में स्थित गाँव में आज दैनिक गतिविधियां रहीं हो लेकिन अब बदलती हुई स्थितियों में ये उतनी आम नहीं रह गई है। अब ये तेजी से आधुनिक जीवन शैली का हिस्सा बन रहीं है तथा दुनियाभर के करोड़ों लोगों के दिलों में भारत के लिए जगह बना रही है। दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तु पर हस्तशिल्पकला वह कला है जिसमें बौद्धिकता या उपयोगिता होती है। उपयोगी वस्तु में हस्तशिल्पकला मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति से जुड़ा है। इसमें बाहरी सौन्दर्य होता है। उपयोगी कला–निर्माण और शिल्प कौशल जैसे व्यवहारिक कला विषयों के कौशल और तरीकों से सम्बन्धित है। जीवन का ऐसा कोई कला नही है, जो शिल्प के अन्तर्गत न आ सकता है। सभी प्रकार की कलाएं शिल्प के अन्तर्गत ही आती है। आधुनिक काल में इन शब्दों का सूक्ष्म रूप से अध्ययन एवं विवेचन किया है और अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। उपयोगी हस्तशिल्पकला को भी विशेष कला माना जाता है।

मुख्य शब्द

हस्तशिल्प, दृश्यकला, हथकरघा, लोककला, उपयोगी वस्तु–उत्पाद।

उत्तर प्रदेश शिल्पकला के निर्माण एंव अभिकल्पन में दृश्यकला का प्रयोग

उत्तर प्रदेश हस्तशिल्प को किसी भी सभ्यता का झरोखा कहा जा सकता है। हस्तकला जहाँ भारतीय संस्कृति का ताना–बाना बुनता है वहीं हस्तशिल्प में दृश्यकला उसमें रंग भरता है। यह सांस्कृतिक विरासत देश के हर गॉव की जीवन शैली में रची बसी है। गॉधी जी ने एक बार कहा था कि असली भारत गॉवों में बसता है। आज हमें उस भारत को विकसित करने के लिए हस्तशिल्प में लोककला व हथकरघा को प्रोत्साहित करने की जरूरत है क्योंकि जिस उद्योग करघा को हाथ से चलाया जाता है उसे हथकरघा उद्योग कहते है। हाथ से बने वस्त्र का उद्योग जहां भारत की एक बड़ी आबादी को रोजगार प्रदान करता हैं वहीं दूसरी ओर हाथ से बने वस्त्रों की बाजार में विशेष मांग रहती है। यहाँ के लोगों में कलात्मकता की अभिरुचि देखने को मिलती है। कहा जाता कि है भारत हस्तशिल्प वस्तुओं में दृश्यकला और हथकरघों का देश है। इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता है कि भारत की विशिष्ट सांस्कृतिक छवि में हथकरघा और हस्तशिल्प में दृश्यकला की समृद्ध विरासत का बड़ा योगदान है। अतीत में कांजीवरम, बंधेज, जरदोजी, बोम्कई एवं तंगेज की रंग–बिरंगी धारियाँ, सुगन्धित चंदन पर उकेरी जाने वाली आकर्षक छवियॉ, शिल्पकारों के हथौड़े से आश्चर्यजनक और विविधरूप ग्रहण करने वाली धातुओं की वस्तु उत्पाद तथा कालीनों और दरियों, बक्सों एवं झोलों, आभूषणों की विविधता भले ही देश के किसी भी कोने में स्थित गॉव में आज दैनिक गतिविधियां रहीं हो लेकिन अब बदलती हुई स्थितियों में ये उतनी आम नही रह गई है। अब

ये तेजी से आधुनिक जीवन शैली का हिस्सा बन रहीं है तथा दुनियाभर के करोड़ों लोगों के दिलों में भारत के लिए जगह बना रही है। देश के अंदर और बाहर हर जगह हाथ से निर्मित होने में कारण विशिष्टता और अपने–आप में एकमात्र होने की खूबी मिलों से बड़ी संख्या में उत्पादित एक जैसे उत्पाद वस्तुओं की एकरसता से ऊबे लोगों को अपनी तरफ आकर्षित कर रहा है। इसमें हथकरघा और हस्तशिल्प के बाजार विस्तार की भारी सम्भावनाएँ पैदा हुई हैं, जिससें इस क्षेत्र में करोड़ों से ऊपर बुनकरों और हस्तशिल्पियों को रोजगार हासिल होते हैं, जिनमें से एक बड़े समाज के करोड़ों वर्गों से जुड़े लोगों का है। ये सभी तत्व मिलाकर हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र को देश की अर्थव्यवस्था में एक बहुत महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहे हैं। साथ ही साथ ये हस्तशिल्पियों के सशक्तीकरण का एक महत्वपूर्ण औजार भी बनकर तैयार होते जा रहे है। आज के समय सरकारी, गैर सरकारी संस्थाएँ एवं संगठन, शिल्पी और स्वयंसेवी सभी मिलकर इसमें निहित सम्भावनाओं से सर्वोत्तम लाभ प्राप्त करने की दिशा में काम कर रहे है। इसके लिए उन्हें विपणन कौशल प्राप्त करना होगा एवं मूल्य श्रृंखला तैयार करनी होगी और वस्तु उत्पादों का प्रचार–प्रसार उनकी ब्रांड छवि बनाने के लिये अनेक कदम उठाने होंगे। कुल मिलाकर चुनौती इस क्षेत्र के लिए धारणीय उत्पादन और विकास की ओर तथा शिल्पियों और बुनकरों के सशक्तीकरण की है। लेकिन अब वित्तीय संस्थान, स्वयं सेवी संगठन तथा सरकार सभी कारीगरों को सशक्त बनाने के लिये सकारात्मक कार्यक्रम के साथ आगे आ रही है। इस प्रकार उत्तर प्रदेश के हस्तशिल्प वस्तुओं को तकनीकी रुपांकन प्रचार और बाजार में वृद्धि जैसी सभी सुविधाएँ उपलब्ध करायें जा रहे है, ताकि कारीगर उच्च गुणवत्ता वाले और माँग के अनुरूप उत्पादन कर सकें तथा उसमें निरन्तरता बनाये रख सकें।

भारतीय हस्तशिल्प वस्तुओं में बहुत विविधता है लेकिन शिल्पकार देशभर में, खासतौर पर ग्रामीण एवं शहरी इलाकों में ज्यादा फैला हुआ है। बदलते समय के अनुसार गैर सरकारी संगठन समय–समय पर शिल्पकारों को सहायता प्रदान करते रहते है और उन्होंने शिल्पकारों के संगठन बनाये हैं। साथ ही साथ सरकारी समितियों तथा निर्माता कम्पनियों की स्थापना भी की है। आज हस्तशिल्प वस्तुओं का एक अलग बाजार विकसित हो चुका है जिसमें उद्यमियों और शिल्पकारों का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्थाओं को अपने उत्पाद वस्तुओं को बेचने का मौका मिलता रहता है एवं हस्तशिल्पियों के विकास में समन्वय के लिए सरकार की सहायता बहुत जरुरी है। आवश्यकता इस बात की है कि सरकार के कार्यक्रम बेहतर ढंग से बनाये जाए जिनमें विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्पी वर्गों और उनके उपखंडों का ध्यान रखा जाएं। आधुनिकीकरण के बदलते हुये युग में हम कह सकते हैं कि केवल भारत में ही एक करोड़ से अधिक शिल्पियों और शिल्पकारों को जबर्दस्त सम्भावनाओं वाली संपदा मानने के बजाय उन्हें आज एक बोझ समझा जाता है। हमें डर है कि इस चकाचौंध की दुनिया में कहीं यह कला विलुप्त न हो जाये, आज हम सभी को इसे अनुग्रह सहायता देकर सहारा देने की अधिक आवश्यकता होती जा रही है।

लेकिन यदि हम सभी को उत्तर प्रदेश के हस्तशिल्प वस्तुकला को खुशहाल बनाना है तो एकजुट होकर सकारात्मक दृष्टिकोण से हमसभी को मिलकर काम करना होगा। साथ ही साथ राज्य, प्रशासनिक तंत्र, जनता एवं संस्थाओं को भी मिलकर काम करना होगा। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में लोककला का व्यापक स्वरूप देखने को मिलता है किन्तु प्रत्येक क्षेत्र की अपनी लोकात्मकता होती है जिसका प्रभाव लोक बाजारों में प्रतिबिम्बित होता है। आज आधुनिक कलाकारों में लोककला का प्रभाव तेजी से नित नवीन रूपों में देखा जा रहा है और उद्योग संस्थाएँ भी लोक हस्तशिल्प में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंच प्रदान करने के लिए भरपूर प्रयासरत है। प्रायः देखा जा रहा है कि इस प्रदेश के हस्तशिल्प वस्तुओं में लोककला का प्रयोग दीवालों पर चित्रकारी, भूमिपर चित्रकारी, मूर्ति, सिक्कों पर कार्य, कुम्भकारी, कसीदाकारी,भित्ति, टाट पर हस्तशिल्प लोकचित्र ,विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प लोक कलाकृति खिलौने, पत्थरों पर हस्तशिल्प लोक अलंकृत कृति, चादर, तकिया, कुशन पर लोकचित्र, लैदर पर लोक हस्तशिल्प आकृतियॉ, सिरेमिक, टेराकोटा, मूर्तियॉ, वाल हैंगिंग, बन्दनवार वैवाहिक लोक हस्तशिल्प कलाकृति, सौन्दर्योपयोगी वस्तुएँ, स्वर्ण लोकहस्तशिल्प कलाकृति आभूषण, विभिन्न प्रकार के गृह उपयोगी वस्तुएँ, कालीन पर लोक हस्तशिल्प अलंकरण, काष्ठपरक लयात्मक लोक हस्तशिल्प नक्काशी, सेरेमिक पर सुन्दर सज्जा हेतु लोक हस्तशिल्प वस्तुएँ, पूजा चौकी पर सुन्दर लोक हस्तशिल्प नक्काशी, बरेली का नक्काशीदार स्टैण्ड, गोरखपुर का नक्काशीदार लोक

हस्तशिल्प निर्मित दरवाजे, पेन्टिंग एवं चित्रकारी कृतियॉ, वाराणसी का सुन्दर प्लेट कलाकृति, फैशन डिजाइनिंग में हस्तशिल्प लोककला की झलक, वस्त्र उद्योग लोक हस्तशिल्प डिजाइन, सीक्विंश डिजाइन, चर्म कलाकृति, पेपरमैशी कृति, जैसे अन्य हस्तशिल्प प्रयोग देखे जा सकते है और बढ़ईगिरी कार्य की एक अलग पहचान बना रही है। साथ ही यह ललित कलाओं के अन्तर्गत से गृहनिर्माण कला, आभुषण कला, वस्त्र कला को भी सम्मिलित किये हुये हैं और प्रयोगों के साथ ही अपना वर्चस्व बनाये हुए है। आज विविध हस्तशिल्प वस्तुयें बाजार में बिखेरे हुये है। इसके लिये अति आवश्यक है कि राज्य सरकार, केन्द्र सरकार, गैरसरकारी संगठन एवं आम जनता, सूचना प्रसार प्रौद्योगिकी तथा तंत्र आपसी सूझ–बूझ एवं समन्वय से एक दूसरे से काम लेते रहते हैं और इस प्रदेश की हस्तशिल्प वस्तुकला को विश्व बाजार में पूरी लगन एवं निष्ठा के साथ पल्लवित एवं पुष्पित कर रहे हैं तभी हम सब इस धरोहर को कायम रख सकेंगे और एक नये उत्तर प्रदेश हस्तशिल्प वस्तुकला द्वारा एवं नये युग का निर्माण भी कर सकेगें। इसके अतिरिक्त इसका व्यापक रूप लोक निर्माण वस्तुकला द्वारा बाजारों में देखा जा सकता है तथा इस प्रदेश के हस्तशिल्प वस्तुकला में नये–नये आकारों, रंगों व रूपों का प्रयोग कर बाजार मॉग के अनुसार लोककला का उपयोग भी कर रहे हैं। जो निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किये जाते हैं रूप–सज्जा में लोककला प्रयोग। युवा महोत्सव में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद का प्रयोग। शिक्षा प्रसार में हस्तनिर्मित लोककला का प्रयोग निम्नलिखित हैः

- बाजारों में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद का प्रयोग।
- विज्ञापन चित्रण में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद की एक झलक।
- उद्योग के नये नजरिये में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद का प्रयोग।
- फैशन डिजाइनिंग में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद निर्माण का कैरियर।
- टैटूज तकनीक में हस्तकला का प्रयोग।
- क्राकरी में हस्तशिल्प का प्रयोग खूब सराहनीय है।
- मधुबनी में लोककला की नई तकनीकियों का वस्तु–उत्पाद में योगदान।
- खेल–खिलौनों में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद की एक झलक।
- बुनाई में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद का प्रयोग।
- लोककला में कम्प्यूटर कलाकार का नित नवीन प्रयोग।
- समकालीन लोककला का हस्तशिल्प कला में प्रयोग।
- बढ़ते हुये कला बाजार में नयी तकनीकी का हस्तशिल्प लोककला में प्रयोग।
- व्यवसायिक लोककला शिक्षा में हस्तकला का योगदान।
- ग्राफिक्स, लीथोग्राफी, मैगजीन, समाचार पत्रों आदि में योगदान।

उत्तर प्रदेश की हस्तनिर्मित लोक कलाएँ वैविध्यपूर्ण होने के साथ–साथ आज उपयोगी वस्तु–उत्पाद और भी महत्वपूर्ण हैं। इनकी सम्मोहक रूपाकृतियों ने विश्व बाजार को न केवल चमत्कृत किया है बल्कि वे अपनी विशिष्ट पहचान भी बनाने में सफल हुये हैं। हमारे यहाँ की हस्तशिल्प और लोक कलाओं से निर्मित वस्तु–उत्पाद के प्रति विश्व पर्यटकों में एक विशेष रुचि, आकर्षण व लगाव देखने को मिलता है, जो सहज रूप से आज बाजारों में हस्त निर्मित वस्तु–उत्पाद कला बाजारों में हथकरघा, मेलों, हाटों, कार्यशालाओं और शिक्षण एवं प्रशिक्षण इन सभी जगहों पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय उद्योग का दर्जा भी लेती जा रही है। आज भी उत्तर प्रदेश में हैण्डलूम पावरलूम उद्योगों की विवेचना करने पर दो मूल तथ्य दृष्टिगोचर होते हैं पहला तो यह कि इस प्रदेश का बुनकर एक उत्कृष्ट कलाकार है जिसकी कुशलता के पीछे उसके पूर्वजों से प्राप्त अनेक पीढ़ियों का अनुभव है, जो हमें सीधे सरल आकारों का निरूपण, सपाट चटक रंग योजना, अनोखा संयोजन, रेखांकन एवं अलंकरण, असंख्य रूपों के साथ अविरल धारा के रूप में लोक हस्तशिल्प कला के बाजारों में इन्द्रधनुष की तरह एक नूतन सबेरा दिखाती रहती है। बाजारों में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद का प्रयोग। जैसेः विज्ञापन चित्रण में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद की एक झलक,

उद्योग के नये नजरिये में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद का प्रयोग, फैशन डिजाइनिंग में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद निर्माण का कैरियर, टैटूज तकनीक में हस्तकला का प्रयोग, क्राकरी में हस्तशिल्प का प्रयोग खूब सराहनीय है। मधुबनी में लोककला की नई तकनीकियों का वस्तु–उत्पाद में योगदान, खेल–खिलौनों में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद की एक झलक, बुनाई में हस्तनिर्मित वस्तु–उत्पाद का प्रयोग, लोककला में कम्प्यूटर कलाकार का नित नवीन प्रयोग, समकालीन लोककला का हस्तशिल्प कला में प्रयोग, बढ़ते हुये कला बाजार में नयी तकनीकी का हस्तशिल्प लोककला में प्रयोग, व्यवसायिक लोककला शिक्षा में हस्तकला का योगदान, ग्राफिक्स, लीथोग्राफी, मैगजीन, समाचार पत्रों आदि में योगदान है। हम सभी को मिलकर हस्तशिल्प लोककला उद्योग के सम्बन्ध में भविष्य की कोई नयी योजना बनाने में विस्तार का सही अनुमान करना अति आवश्यक होगा, तभी तो यह वर्तमान में एक नवीन चेतना का नया रूप धारण कर सकेगी।

उत्तर प्रदेश का निम्न क्षेत्रों में हस्तशिल्प वस्तु–उत्पाद में लोक कलाकारों का योगदानः

- अन्तर्राष्ट्रीय हस्तशिल्प प्रदर्शनी एवं मेले में।
- राज्य सरकार की हस्तशिल्प सामग्री क्रय योजना।
- खादी और ग्रामोद्योग आयोग एवं हस्तशिल्पउत्पादों के लिये आरक्षण।
- कार्यशील पूँजीगत सहायता में योगदान।
- राष्ट्रीय शोध विकास निगम योजना।
- शिक्षित बेरोजगार युवकों के लिए स्वरोजगार योजना।
- वर्तमान में ग्रामोद्योगों का वर्गीकरण कराना।
- जनपद स्तर पर उपलब्ध विकेन्द्रित सुविधाएँ प्राप्त कराना।
- हस्तशिल्पियों के उत्थान हेतु अर्बन हाटों की स्थापना, कौशल विकास की प्रशिक्षण योजना कराना।
- प्रदेश के विशिष्ट हस्तशिल्पियों को राज्य पुरस्कार प्रदान करने की योजना में सहयोग प्रदान करना।

निष्कर्ष

हस्तशिल्प उपयोगी वस्तु मानव जीवन में उपयोग होने वाले भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति से जुड़ा हुआ हैं जिसे कला से अलंकृत किया जाता है। इसके लिए क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिये हस्तशिल्पियों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार योजना बनाना, निर्यात बाजार हेतु डिजाइन वर्कशाप की योजना में योगदान देना आवश्यक है। इसके लिये आवश्यकता है सांस्कृतिक मूल्यों के पुनर्जागरण और उनमें आस्था जगाने की जिसे सहजता, गुण, श्रम, निष्ठा से परिपूर्ण किया जाता है। तभी उत्तर प्रदेश की हस्तशिल्प लोककला चिरस्थायी होकर, समाज और संस्कृति का सचित्र रूप प्रस्तुत कर सकेगी। इन्हें व्याव्हारिक हस्तशिल्प कला, उपयोगी कला या सजावटी कला भी कह सकते है। इसे शिल्प कला जो की अब हैण्डीक्राफ्ट नाम से प्रचलित है जो उपयोगी वस्तु में कला आप कई जगह देख सकते अभिकल्पन हो रहा है जैसे दीवाल पर लगाने के लिये अंलकारित वॉलपेपर है। पोशाकों पर भी विभिन्न तरह के हस्तशिल्प उपयोग किया जा रहा है। अब तो लोक कला को भी कपड़ों पर बेहतर तरिके से उतारा जा रहा हैं। सामान्य रूप से यह कला सौन्दर्यात्मक पहलू है और उपयोगी वस्तु उत्पाद पर कला है।

सन्दर्भ सूची

1. भारत में हस्तशिल्प और वस्त्र उद्योग, योजना, अप्रैल 2019,आईएसएसएन 0971–8397
2. हथकरघा बाजार– पृष्ठ सं. 32 व 33
3. उपाध्याय, देवेन्द्र, नई दिल्ली, योजना– 2007 अंक– 4
4. हस्तशिल्प कला के विविध आयम–कमलेश माथुर

5. जौनपुर, अमर उजाला–31 दिसम्बर, रविवार 2015,
6. सहाय, राम, उत्तर प्रदेश– 1972, हस्त एवं शक्तिचलित करघा
7. दिसम्बर 2008– लोककला आधुनिक कला पर उसका प्रभाव,
8. सिंह, राम वचन, वाराणसी– 1973, भारतीय विधा प्रकाशन.
9. नई दिल्ली, अंक –4, वर्ष–51, जुलाई 2007– योजना पत्रिका,

––==00==––